INDIA, IRAN SIGN MOU FOR SMOOTH MOVEMENT OF SEAFARERS

Recently, India and Iran signed a Memorandum of Understanding(MoU) on recognition of **Certificates of Competency in Unlimited Voyages.**

Key Points

- The MoU was signed as per the provisions of the **International Convention on Standards of Training, Certification and Watch Keeping for Seafarers (1978).**
- **Significance of MoU:**
  - Help seafarers from both countries as per the STCW.

Image Source: World Atlas

India - Iran Relations

Background:

- India and Iran share close historical ties from the times of the Persian Empire and Indian kingdoms.
- The two countries shared a border until India's partition and independence in 1947.
- In 1950 India and Iran established diplomatic relations.
- In 2001 and 2003, the Tehran and New Delhi declarations were signed to enhance the strategic partnership between the two nations.

Areas of cooperation

Political relations: India and Iran signed a **friendship treaty on March 15, 1950.**

- **Tehran Declaration:** The two countries signed the "Tehran Declaration" in 2001, which set forth the areas of possible cooperation between the two countries.

Economic links:

- India-Iran economic and commercial ties have traditionally been buoyed by the Indian import of Iranian crude oil.
- **India's major exports:** Rice, tea, sugar, soya, medicines/pharmaceuticals, man-made staple fibres, electrical machinery, etc.
- **Major imports:** Inorganic/organic chemicals, fertilisers, cement clinkers, fruits and nuts, leather, etc.

Humanitarian Assistance:

- In 2020, India provided 40,000 litres of Malathion 96% ULV pesticides to Iran via Chabahar port to mitigate locust threats to agriculture and enhance food security in the region.
- India delivered PPE kits and PCR machines during the COVID-19 crisis.

Connectivity Projects:

- **International transport and transit corridor project:** This project initially conceived in 2003 was finally agreed upon in 2016.
- **Iran, India and Afghanistan** signed the 'International Transport and Transit Corridor Agreement' in 2016 in Tehran(Iran).

About Chabahar Port:

- **Location:** Chabahar port is **located in Iran's southeastern Sistan and Baluchestan province** on the edge of the Indian Ocean.
- It is the **only deep-sea port in Iran** with direct ocean access.
- **Important Commercial Hub:** It acts as a key transit center on the burgeoning International North-South Transport Corridor, giving it the potential to develop into one of the most important commercial hubs in the region.

Significance of the Chabahar Port for India:

- To harness the trade opportunities by India with Central Asian countries.
- Increase in trade and shipment volume.
- A catalyst to unlock the huge trade potential in the region.
- Strengthen India's position as a regional and global power.
- Counter Chinese presence in the Arabian Sea which China is trying to ensure by developing the Gwadar port.

Way Forward:

- India and Iran can revamp their worldview by using common identities and interests to carve a space for themselves in Afghanistan.
- With the Iran nuclear deal unlikely to come through soon, India may well consider restarting oil imports from Iran.
- India and Iran could play a major part in giving INSTC the required boost to reap the benefits of resultant trade.
- India's engagement with Iran could open a huge potential for cooperation between these two great nations and civilizations.

भारत, ईरान ने नाविकों की सुगम आवाजाही के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

हाल ही में, भारत और ईरान ने असीमित यात्राओं में **योग्यता प्रमाण पत्र की मान्यता पर एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।**

प्रमुख बिंदु

- नाविकों के लिए प्रशिक्षण, प्रमाणन और निगरानी के मानकों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1978) के प्रावधानों के अनुसार समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- **समझौता ज्ञापन का महत्व:**
  - STCW के अनुसार दोनों देशों के नाविकों की मदद करें।

छवि स्रोत: विश्व एटलस

भारत-ईरान संबंध

पृष्ठभूमि:

- भारत और ईरान फारसी साम्राज्य और भारतीय राज्यों के समय से घनिष्ठ ऐतिहासिक संबंध साझा करते हैं।
- 1947 में भारत के विभाजन और स्वतंत्रता तक दोनों देशों ने एक सीमा साझा की।
- 1950 में भारत और ईरान ने राजनयिक संबंध स्थापित किए।
- 2001 और 2003 में, दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को बढ़ाने के लिए तेहरान और नई दिल्ली घोषणाओं पर हस्ताक्षर किए गए थे।

सहयोग के क्षेत्र

राजनीतिक संबंध: भारत और ईरान ने **15 मार्च 1950 को एक मैत्री संधि** पर हस्ताक्षर किए।

- **तेहरान घोषणा:** दोनों देशों ने 2001 में "तेहरान घोषणा" पर हस्ताक्षर किए, जिसने दोनों देशों के बीच संभावित सहयोग के क्षेत्रों को निर्धारित किया।

आर्थिक जुड़ाव:

- भारत-ईरान आर्थिक और वाणिज्यिक संबंध परंपरागत रूप से ईरानी कच्चे तेल के भारतीय आयात से उत्साहित हैं।
- **भारत के प्रमुख निर्यात:** चावल, चाय, चीनी, सोया, दवाएं / फार्मास्यूटिकल्स, मानव निर्मित स्टेपल फाइबर, विद्युत मशीनरी, आदि।
- **प्रमुख आयात:** अकार्बनिक/जैविक रसायन, उर्वरक, सीमेंट क्लिंकर, फल और मेवा, चमड़ा, आदि।

मानवीय सहायता:

- 2020 में, भारत ने ईरान को चाबहार बंदरगाह के माध्यम से 40,000 लीटर मैलाथियान 96% यूएलवी कीटनाशकों को कृषि के लिए टिड्डियों के खतरे को कम करने और क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा बढ़ाने के लिए प्रदान किया।
- भारत ने COVID-19 संकट के दौरान PPE किट और PCR मशीनें वितरित कीं।

कनेक्टिविटी परियोजनाएं:

- **अंतर्राष्ट्रीय परिवहन और पारगमन गलियारा परियोजना:** इस परियोजना की शुरुआत में 2003 में कल्पना की गई थी और आखिरकार 2016 में इस पर सहमति बनी।
- **ईरान, भारत और अफगानिस्तान** ने 2016 में तेहरान (ईरान) में 'अंतर्राष्ट्रीय परिवहन और पारगमन कॉरिडोर समझौते' पर हस्ताक्षर किए।

चाबहार बंदरगाह के बारे में:

- **स्थान:** चाबहार बंदरगाह ईरान के **दक्षिणपूर्वी सिस्तान और बलूचिस्तान प्रांत में हिंद महासागर** के किनारे पर स्थित है।
- यह ईरान का **एकमात्र गहरे समुद्र** का बंदरगाह है जिसकी सीधी समुद्री पहुंच है।
- **महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र:** यह बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे पर एक प्रमुख पारगमन केंद्र के रूप में कार्य करता है, जिससे इसे इस क्षेत्र के सबसे महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्रों में से एक के रूप में विकसित होने की क्षमता मिलती है।

भारत के लिए चाबहार बंदरगाह का महत्व:

- भारत द्वारा मध्य एशियाई देशों के साथ व्यापार के अवसरों का दोहन करना।
- व्यापार और शिपमेंट मात्रा में वृद्धि।
- उत्प्रेरक क्षेत्र में विशाल व्यापार क्षमता को अनलॉक करने के लिए।
- एक क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति के रूप में भारत की स्थिति को मजबूत करना।
- अरब सागर में चीनी उपस्थिति का मुकाबला करें जिसे चीन ग्वादर बंदरगाह विकसित करके सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहा है।

आगे की राह:

- भारत और ईरान अफगानिस्तान में अपने लिए जगह बनाने के लिए समान पहचान और हितों का उपयोग करके अपने विश्वदृष्टि में सुधार कर सकते हैं।
- चूंकि ईरान परमाणु समझौता जल्द ही होने की संभावना नहीं है, भारत ईरान से तेल आयात को फिर से शुरू करने पर विचार कर सकता है।
- भारत और ईरान आईएनएसटीसी को परिणामी व्यापार के लाभों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक बढ़ावा देने में एक प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।
- ईरान के साथ भारत के जुड़ाव से इन दो महान राष्ट्रों और सभ्यताओं के बीच सहयोग की अपार संभावनाएं खुल सकती हैं। इसलिए रीसेट के लिए समय परिपक्व है।